

# जब पति पत्नी में सहमति न हो

वचन पाठ: इफिसियों 4:25-32

हमने साधारण रूप से घर को और विशेष रूप से पति और पत्नी को देखा है। मसीही घर से जुड़े मामलों पर विचार करने से पहले आइए हम पति-पत्नी से जुड़े प्रश्न की बात करते हैं। यह बात कई तरीकों से की जा सकती है,<sup>1</sup> परन्तु आइए हम इस विषय पर एक दृष्टिकोण से अपना ध्यान लगाते हैं कि “जब दम्पति असहमत हो” तो क्या होता है।

एक दूसरे से प्रेम करने के बावजूद पति और पत्नी में कई बार किसी बात पर अनबन हो जाती है। उनके रिश्ते में ये बातें होनी स्वाभाविक हैं और ऐसी अनबन कुल मिला कर बुरी नहीं है। किसी ने कहा है, “दो जन यदि आपस में सहमत हों, तो उनमें से एक की आवश्यकता नहीं है।” यहां तक कि पौलुस और बरनबास के एक-दूसरे के इतना करीब होने के बावजूद उनमें भी एक बार “गहरा विवाद” (प्रेरितों 15:39) हो गया था।

यह जानने के लिए कि जब आप में अनबन हो जाए तो आपको क्या करना चाहिए, इफिसियों 4:25-32 का अन्तिम भाग देखें। इस भाग में पौलुस ने पहनावे के रूपक का इस्तेमाल करते हुए नये जीवन को दिखाया है, जो एक सच्चे मसीही का चित्रण है।<sup>2</sup> आपकी जीवन रूपी अलमारी में सादा और विशेष अवसरों पर पहनेने वाले दो प्रकार के कपड़ों हैं। मतलब यह है कि यीशु ने आपके लिए अलमारी खुद चुनी है, और वह उनमें से कपड़ों को रखता है, जो वह चाहता है कि आप पहनें।

इस भाग में बहुत ही गंभीर सच्चाइयां छिपी हैं, परन्तु हम अपनी चर्चा इसी विषय पर केन्द्रित रखेंगे, कि अपने पति/अपनी पत्नी से असहमत होने पर आपका व्यवहार कैसा होना चाहिए। इस वचन-पाठ से मैं सात सुझाव देना चाहता हूँ।<sup>3</sup> मैं हर सुझाव का विवरण पहले संक्षेप परन्तु मे दूंगा, उसके बाद समझाने के लिए उसे विस्तार बताऊंगा।

## ईमानदार रहें (4:25)

पहला सुझाव जो असहमति से जुड़ा है, उसका संक्षिप्त विवरण है कि, “ईमानदार रहें।” इस का पूरा विवरण इस प्रकार है: एक-दूसरे के साथ आदर से, दयालुता से, और प्रेम से खुलकर बात करें।<sup>4</sup>

हमारा वचन-पाठ आरम्भ होता है, “इस कारण झूठ बोलना छोड़कर हर एक अपने पड़ोसी से सच बोले, क्योंकि हम आपस में एक-दूसरे के अंग हैं” (आयत 25)। यहां हम झूठ पर कुछ सबक देने के लिए रुकते हैं, क्योंकि आज ऐसा लगता है जैसे सच का अभाव हो गया हो। परन्तु अभी तो हम पति और पत्नी के सम्बन्ध पर बात कर रहे हैं। “पड़ोसी” का मूल अर्थ है “जो पास हो”; सचमुच भौगोलिक रूप में हो या मानसिक रूप से में कोई भी हमारे इतना निकट नहीं होता, जितना हमारे जीवन-साथी!

पौलुस ने अपनी बात शारीरिक देह का उदाहरण देकर समझाई है<sup>f</sup> आइए इस उदाहरण को आगे बढ़ाएं। दायां हाथ बाएं को धोखा देने की कोशिश नहीं करता। यदि बायां हाथ मुश्किल में होगा तो दायां हाथ मदद करने की कोशिश करेगा-और सहानुभूति देगा, परन्तु दायां हाथ हालात की गंभीरता के विषय में कभी भी बाएं हाथ को धोखा देने की कोशिश नहीं करेगा।

जब हम एक-दूसरे से किसी भी बात पर असहमत हों, तो हमें उस मामले में एक-दूसरे के प्रति स्पष्ट और ईमानदार रहना चाहिए। यीशु ने कहा कि यदि किसी ने आपको कष्ट पहुंचाया है,<sup>6</sup> तो उसके पास जाकर उससे बात करें (मत्ती 18:15)। यदि आप ने किसी को कष्ट पहुंचाया है तो आपको उसके साथ बैठकर मामले को सुलझा लेना चाहिए किसी को कष्ट पहुंचाया है (मत्ती 5:23, 24)। प्रभु की शिक्षाएं घर में भी उतनी ही लागू होती हैं, जितनी कलीसिया में।

इसे करना भी आवश्यक है और करने का ढंग भी है। हमें एक-दूसरे का आदर करना चाहिए; क्योंकि जैसे पौलुस ने जोर देकर कहा है, “हम आपस में एक-दूसरे के अंग हैं।” शारीरिक देह के एक अंग के लिए यह आवश्यक है कि वह देह के दूसरे अंग का आदर करे। न केवल एक हाथ दूसरे हाथ को धोखा नहीं देता है, बल्कि एक हाथ दूसरे को गाली भी नहीं देता।

ईमानदार होने के अलावा, आपको दयालु और प्रेम करने वाला भी होना आवश्यक है। आयत 15 में पौलुस ने कहा कि हम “प्रेम से सच” बोलें। आयत 32 हमें “एक-दूसरे पर कृपालु और करुणामय” होने को कहती है।

*ईमानदार रहें-प्रेम से।*

### **अपने आप को काबू में रखें (4:26, 27)**

दूसरा सुझाव है कि “अपने आप को काबू में रखें।” अपने क्रोध को काबू में रखें यानी सावधान रहें कि आपकी भाषा से खतरनाक न हो।

आयत 26क कहती है, “क्रोध तो करो, पर पाप मत करो।” यह आयत हमें क्रोध के विषय में बहुत कुछ बताती है। क्रोध करना हर बार पाप नहीं होता। किसी समय या परिस्थिति में क्रोध करना उचित भी होता है। परमेश्वर के भी क्रोधित होने की बात मिलती है (गिनती 25:4; व्यवस्थाविवरण 9:8, 20; यिर्मयाह 4:8; 12:13)। कई बार यीशु भी क्रोध में आता था (मरकुस 3:5; यूहन्ना 2:13-17; देखें मत्ती 21:12, 13)। मुझे और

आपको पाप पर क्रोध आना आवश्यक है; हमें उन कामों पर भी क्रोधित होना चाहिए जो लोगों को आत्मिक और शारीरिक रूप में बर्बाद कर रहे हैं। परन्तु हम में से अधिकतर को गलत परिस्थितियों में क्रोध आता है। बड़े संकट में हम शान्त रहते हैं, जबकि बेकार विषयों पर हमें अत्यधिक क्रोध आता है।

हम आयत 26 के पहले भाग में फिर आते हैं, “क्रोध तो करो, पर पाप मत करो।” आम तौर पर एक-दूसरे पर क्रोधित होने पर हम जो कहते और करते हैं, वह पापपूर्ण ही होता है। एक महिला अपने कंधे उचकाकर अपने बुरे स्वभाव का बखान करती हुए कहती है, “मुझे क्रोध न दिलाओ वरना अनर्थ हो जाएगा।” इस महिला की सहेली, जो इसके बुरे व्यवहार की कई बार शिकार हो चुकी थी, ने उत्तर दिया, “बन्दूक की गोली भी ऐसी ही होती है। चल जाने से सब अनर्थ हो जाता है। पर उस नुकसान के बारे में सोच जो इससे होता है।”

क्रोध में बोले गए शब्द निर्दयी, चुभने वाले और दुख पहुंचाने वाले हों सकते हैं। हम में से हर कोई अपने या अपने बारे में बोले गए शब्दों को गिन सकता है, उन्हीं शब्दों को गिने, जो इतने सालों बाद भी हमें दुख पहुंचाते हैं।

यह तय कर लें कि जब आपकी अपने साथी से अनबन हो तो “भारी तोपखाने” को इस युद्ध से परे ही रखें। आप समझ ही गए होंगे कि “भारी तोपखाने” कहने से मेरा क्या तात्पर्य है। हम सब भेद्य हैं, हम यानी सबको चोट पहुंच सकती है; और जितनी अच्छी तरह आप किसी मनुष्य को जानते हैं, उससे भी अच्छी तरह आप यह जानते हैं कि आप उसे कैसे चोट पहुंचा सकते हैं। जब हम गुस्से में होते हैं तो “भारी तोपखाने” अर्थात्- द्वेषपूर्ण शब्द, दोषारोपण, दर्द देने वाली पुरानी यादें उगल कर। मेरी विनती है कि, ऐसा मत करें। जब आप को क्रोध आए तो पाप न करें।

आयत 27 जोड़ती है, “और न शैतान को अवसर दो।”<sup>7</sup> दि जरूसलेम बाइबल में है “वरना आप शैतान को पांव रखने की जगह दोगे।”<sup>8</sup> एक क्रोधित पति या क्रोधित पत्नी शैतान का शिकार बड़ी आसानी से बन जाते हैं। क्रोध आपके आत्मिक प्रतिरोध को कम कर देता है।

यदि आपको यह लगे कि आपको क्रोध आ रहा है और आप क्रोध में ऐसा कुछ कहने वाले हैं, जो नहीं कहना चाहिए, तो आपके लिए यह अच्छा होगा कि आप वह सब न कहें। कुछ समय लें अपने आप को “शान्त होने दें।” चाहे कुछ भी करना पड़े, पापपूर्ण शब्द कहने से जितना बच सकते हैं, बचें।

*अपने आप पर नियंत्रण रखें, अपनी जुबान पर काबू रखें।*

### **इसे ठीक कर लें (4:26)**

तीसरा सुझाव है “इसे ठीक कर लें।” क्रोध या नाराज़गी को पकड़े न रखें; समस्याओं का समाधान तत्काल ढूंढें।

मैंने पहले भी सुझाव दिया था कि कोई ऐसी बात, जो कहनी उचित न हो, से निकालने

से अच्छा है कि आप टहलने चले जाएं। इसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं है कि हम कड़वाहट को साथ ले जाकर और उस पर मंसूबे बनाते रहें। आयत 31 में पौलुस ने कहा कि “कड़वाहट” हमसे दूर की जाए। पता है कि लोग कड़वाहट से कैसे भर जाते हैं? शिकायतों को पाल कर उन्हें दिल में ही रख कर। जब आप शान्त हो जाएं या आपका क्रोध ठंडा हो जाए तभी आप वापस आकर हालात पर विचार करें।

आयत 26 बताती है कि हमें अपने मन-मुटाव को जल्दी ही खत्म कर देना चाहिए: “क्रोध तो करो, पर पाप मत करो; सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे।” इसे अगले तीन माह के लिए या अगले एक दिन के लिए भी न टालें। पौलुस ने कहा, “सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे”; असहमति पर अभी ध्यान दें। एक पति, जिसे मैं जानता हूँ, कहता है कि हम पति-पत्नी में यह एक तरह का करार है कि रात को बिस्तर पर जाने से पहले हम दोनों में हर हाल में सुलह होगी चाहिए। “यह तरीका कारगर।” वह कहता है, “आप किसी भी बात पर सुबह दो या तीन बजे तक सहमत हो ही जाएंगे।”<sup>10</sup>

यदि आप अपना झगड़ा महीनों या सालों? या अभी तक चलने देते हैं तो आज अपनी कड़वाहट पर सूर्य को अस्त न होने दें। समस्या पर इससे जल्दी ध्यान नहीं दिया जा सकता, और न आप में अधिक लम्बे समय तक इंतजार करने की हिम्मत है।

समय मतभेदों को सुलझाने की कुंजी होती है। किसी भी बुरे हालात को जितनी जल्दी हो सके दूर करें; परन्तु हालात को देखकर। मिलकर बात करने के लिए रजामंद हों। ध्यान रहे कि आप दोनों का अपनी भावनाओं पर नियंत्रण है। प्रश्न पर ध्यान करने से पहले दोनों प्रार्थना में जाएं। बातचीत शुरू करने के लिए एक-दूसरे की पसन्दीदा बातें करें<sup>11</sup> ताकि आपकी चर्चा से यह न लगे कि आप एक-दूसरे पर निजी हमला कर रहे हैं।

*समय हर समस्या का हल है। समस्याओं का सामना करें, जिससे कोई नाराज़गी उत्पन्न न हो।*

### **आशावादी रहें (4:28)**

चौथा सुझाव भी तीसरे से जुड़ा हुआ है कि “आशावादी बनें।” इससे पहले कि कोई समस्या खड़ी हो जाए, उसके समाधान के लिए तैयार रहें।

पहली नज़र में तो, वचन-पाठ की अगली आयत से लगता है कि यहां एक की सलाह दी गई है, बुराई को उतारकर अच्छाई को पहनना: “चोरी करने वाला फिर चोरी न करे; बरन भले काम करने में अपने हाथों से परिश्रम करे; इसलिए कि जिसे प्रयोजन हो, उसे देने को उसके पास कुछ हो” (आयत 28)। पौलुस ने सम्भवतया यह सुझाव उस बात का उदाहरण देते हुए शामिल किया होगा, जो उसके मन में उस समय था, जब उसने कहा, “तो भी शैतान को अवसर दो” ना देने को कहा (आयत 27)। अगर एक चोर यह निर्णय ले ले कि आगे से चोरी नहीं करूंगा, शैतान के पास फिर भी उसके जीवन में पांव रखने की जगह होती है। उसके पास आशावादी होकर करने के लिए कुछ होना आवश्यक है, “उसे अपने हाथों से मेहनत करके कमाना चाहिए, जो अच्छा है।” उसका ध्यान अपने लक्ष्य पर

ही होना चाहिए, “ताकि उसके पास कुछ हो, जिसे वह किसी ज़रूरतमंद के साथ बांट सके।” इस दृष्टिकोण से देखते हुए यह आयत कुछ ऐसे वास्तविक प्रयास करने के सुझाव देती है, जो प्रत्यक्ष रूप से पति-पत्नी में असहमति के से सम्बद्ध हैं।

कई बार, जब हमें लगता है कि हम ईमानदार और खुली किताब हैं, हम अपनी आलोचना के लिए रास्ता खोलते हैं। यह अच्छी बात नहीं है। आलोचना करना बहुत आसान है, क्योंकि यह तो कोई भी कर सकता है। सकारात्मक हल की पेशकश करना बहुत ही चुनौतीपूर्ण है।

इस विषय पर बात करते हुए मैं आमतौर पर अपने सुनने वालों से उस इमारत के चारों ओर देखने के लिए कहता हूँ, जिसमें हम होते हैं। मैं पूछता हूँ, “आप में से कितने लोगों को यह लगता है कि यदि आपके पास औज़ार हों तो आप इस भवन को तोड़ सकते हैं?” लगभग हर हाथ ऊपर उठ जाता है। मैं अगला प्रश्न पूछता हूँ, “आप में से कितने लोगों को यह लगता है कि नींव डाल कर इमारत खड़ी करना, पाइपें डालना, ईंटें लगाना, बिजली का काम इत्यादि सब कुछ जो ऐसी भवन के लिए ज़रूरी है, आप कर सकते हैं?” थोड़े से लोग ही हाथ उठाते हैं, अधिक नहीं। तब मैं इस उदाहरण का विस्तार करता हूँ कि जोड़ने से तोड़ना कहीं आसान है।

आयत 28 में एक और सच देखने को मिलता है। जब हमें लगता है कि हम बहुत ईमानदार और स्पष्ट हैं तो हम शायद केवल अपने बारे में ही सोच रहे होते हैं। आयत 28 का सबसे बड़ा उद्देश्य यही है कि हम दूसरों के बारे में सोचें। (बहुत से लोग काम करते हैं चोरी नहीं करते, लेकिन वे काम अपने पास धन इकट्ठा करने के लिए करते हैं, किसी को देने के लिए नहीं।) हम इस तरह से आत्म-विश्लेषण कर सकते हैं कि क्या मैं अपने साथी की परवाह करने के बजाय अपनी ही परवाह कर रहा हूँ? जब मेरे वैवाहिक जीवन या घर पर असर करने वाली कोई बात आती है तो क्या मुझे इस बात का अधिक ध्यान रहता है कि मुझे क्या चाहिए या मेरे परिवार के लिए क्या ज़रूरी है?

*आशावादी बनें। समाधान पर अधिक ध्यान दें न कि कठिनाइयों पर।*

### **चौकस रहें (4:29, 30)**

पांचवां सुझाव है कि “चौकस रहें” कि आप क्या कहेंगे और किससे कहेंगे और कै से कहेंगे।

हम उन शब्दों पर वापस आते हैं, जो हम तब बोलते हैं, जब हम परेशानी में होते हैं, क्योंकि दस में से नौ बार<sup>12</sup> जब पति-पत्नी में मतभेद होता है तो सभी बातें कही जाती हैं, जो उचित नहीं हैं। आयत 29 आरम्भ होती है, “कोई गन्दी बात तुम्हारे मुंह से न निकले” (आयत 29क)।

अनुवादित शब्द “गन्दी” के यूनानी शब्द का अर्थ “सड़ी हुई” है। यूनानी लोग गली-सड़ी सब्जी और मांस के लिए इसी शब्द का इस्तेमाल करते थे।<sup>13</sup>

मुझे एक अजीब से खाने की याद आती है, जो मैंने और मेरे दोस्त ने अलग समय और

अलग जगह पर खाया था: मीट की सब्जी सूअर का मांस था, जिस पर मोटी खाल और रोएं थे। सब्जी भी सड़े हुए फल और सब्जियों से तैयार की गई थी। जो मीठा दिया गया, वह सड़े हुए केले की फिरनी थी। जब भी मैं इस खाने के बारे में बताता हूँ (जो इससे कहीं बुरा था, जितना मैंने यहां बताया है), तो कड़ियों के चेहरे के हाव-भाव देखने वाले होते हैं, जिन्हें लग रहा हो सकता है कि यह तो है। अब यह कहानी हमारे साथ क्यों साझा कर रहे हैं, जिसने वह खाना होगा। मेरा उद्देश्य उसका अपमान करना नहीं है, जिसने वह खाना परोसा क्योंकि हो सकता है कि उसने अपनी ओर से सबसे बेहतरीन खाना बनाया हो। मेरा यह सब बताने का उद्देश्य यह था कि यदि सड़े हुए फल, सड़ी हुई सब्जी या सड़े हुए मीट की बात सुनकर उन्हें घृणाजनक लगता है, तो शब्द कितने घृणित हो सकते हैं, जो हम एक दूसरे के बारे में बोलते हैं! विशेष कर जब हम उन घृणित शब्दों को याद करते हैं, जो हमने अपने पति या अपनी पत्नी को बोले हैं।

हमें कैसे शब्दों का इस्तेमाल करना चाहिए? उन शब्दों का जिन से दूसरे का सुधार हो, जिनसे दूसरे की मज़बूती हो “पर आवश्यकता के अनुसार वही, जो उन्नति के लिए उत्तम हों” (आयत 29ख)। फिलिप्स के अनुवाद में “अच्छे शब्दों का ... शब्द जो अवसर के अनुसार हैं।”<sup>14</sup>

हमें चतुराई का इस्तेमाल करना चाहिए। शब्दकोष “चतुराई” की व्याख्या “बोलने की योग्यता या बिना किसी को ठोकर दिए काम करने सहित दूसरों के साथ व्यवहार करने में जो सही और उपयुक्त हो बड़ी संवेदनशीलता” के रूप में की जाती है।<sup>15</sup> मुझे यह परिभाषा अच्छी लगती है, “होशियारी किसी को शत्रु बनाए बिना अपनी बात को कुशलता से रखना है।” बुद्धिमान ने चतुराई भरी बात को “सहानुभूतिपूर्ण,” “कोमल” बात कहा है। KJV में नीतिवचन 15:1 के अनुवाद से हम सब अच्छी तरह परिचित हैं, “कोमल उत्तर सुनने से गुस्सा ठण्डा हो जाता है, परन्तु कटु वचन से क्रोध भड़क उठता है।” NASB का अनुवाद है, “A gentle answer turns away wrath, but a harsh word stirs up anger.”

हमारा वचन पाठ हमें सिखाता है कि हमें ऐसे शब्दों का इस्तेमाल करना चाहिए, “जिस से सुनने वालों पर अनुग्रह हो” (इफिसियों 4:29)। “अनुग्रह वह है जिस की आप को आवश्यकता है, न कि वह जिसके आप योग्य हैं।” हमारी बातों से हमारे साथी पर अनुग्रह होना चाहिए न कि शाप। किसी ने कहा है कि “या तो हम पत्थर बरसा सकते हैं या फिर फूल।”

आयत 30 में पौलुस ने उस उत्तेजक विवरण को जोड़ा है: “और परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिस से तुम पर छुटकारे के दिन के लिए छाप दी गई है।” इफिसियों का पहला अध्याय पवित्र आत्मा के छाप करने के विषय में है (1:13, 14)। बपतिस्मा (पानी में डुबकी) होने के समय हमें पवित्र आत्मा का दान मिलता है (प्रेरितों 2:38) और परमेश्वर हम पर अपनी मुहर लगाता है। हम उसके हो जाते हैं और उसकी सुरक्षा में हैं। हम परमेश्वर के हैं, इसलिए जैसे हमें काम करना चाहिए वैसे न करके हम

परमेश्वर का दिल तोड़ते हैं। संदर्भ में हम परमेश्वर का दिल तब तोड़ते हैं जब हम वैसा नहीं बोलते हैं जैसा हमें बोलना चाहिए। आइए हम इस नियम को विशेष रूप से अपने इस विषय पर भी लागू करें: हम आत्मा का दिल तोड़ते हैं जब पतियों और पत्नियों के रूप में सही नहीं चलते।

“शोकित करने” का अर्थ क्या है? आपकी प्रतिक्रिया तब कैसी होती है। आप शोकित कैसे होते हैं? आप विलाप कर रहे हो सकते हैं, आप कराह रहे हो सकते हैं; आप आहें भर रहे हो सकते हैं; आप आंसू बहा रहे हो सकते हैं। क्या आपने कभी किसी पति या पत्नी को एक दूसरे से बुरा व्यवहार करते देख स्वर्ग से परमेश्वर के विलाप का, कराहने का, आहें भरने का या रोने का शब्द सुना है?<sup>16</sup>

*सावधान रहें, केवल उत्साहित करने वाली बातें ही कहें, अलग करने वाली नहीं।*

### **इसे निजी रखें (4:31)**

छठा सुझाव है कि “इसे निजी रखें।” जहां तक हो सके अपनी असहमति को अपने तक ही रखें। जहां तक हो इसे निजी रखें। इसे सीमित करके छोटा करें न कि राई का पहाड़ बनाने की कोशिश करें।

आयत 31 उन सब बातों का सार है, जो हमें छोड़ देनी चाहिए, यदि हमें दूसरों के साथ चलना है: “सब प्रकार की कड़वाहट और प्रकोप और क्रोध, और कलह, और निन्दा सब बैरभाव समेत तुम से दूर की जाए।”

पहले भाग में “कड़वाहट” शब्द का उल्लेख किया गया है। नाराजगी को पालते रहें, ज़ख्मों और घावों को विस्तार से याद करते रहें तो कड़वाहट कभी खत्म नहीं होगी। अपने साथ हुए अपमान का ध्यान करके लोग बुरे विचारों को अपने मनों में पालते हैं, जिससे उनके दिल कड़वाहट से भरे रहते हैं।

गृह युद्ध के बाद जनरल राबर्ट ई. ली<sup>17</sup> वर्जीनिया के एक बाग का दौरा करने गया। आगे का भाग में एक बहुत बड़ा डरावना सा जला हुआ सूखा पेड़ था। जिस महिला से वह मिलने गया था, वह कहने लगी, “मैंने युद्ध में अपने पति और पुत्र को खो दिया। वह पेड़ मेरी कड़वाहट और क्रोध का प्रतीक है।” ली ने उसकी ओर देखते हुए कहा, “इसे काट डालो।” कई पतियों और पत्नियों में कड़वाहट का पेड़ होता है जिसे काट देना आवश्यक है।

इस आयत में “प्रकोप और क्रोध” का उल्लेख किया गया है। हमने इसके बारे में आयत 26 को जोड़ते हुए बात की।<sup>18</sup> पौलुस ने यह भी कहा है कि “‘कलह’ तुम से दूर की जाए। NIV “क्रोध में चिल्लाना” है। पतियों और पत्नियों को अकेले में भी एक दूसरे पर चिल्लाना नहीं चाहिए दूसरों के सामने तो बिल्कुल भी नहीं।

आगे प्रेरित ने “निन्दा” से दूर रहने के लिए कहा है। यूनानी भाषा में भी इसका अनुवाद “निन्दा” के रूप में हुआ है, जो मनुष्य की भी हो सकती है और परमेश्वर की भी। KJV में “बुराई करना” है। इसमें उपहास करने, व्यंग्य करने या बदनाम करने का विचार है। क्या आप ने कभी किसी ऐसे पति या पत्नी के बारे में सुना है, जो दूसरों के सामने पति

या पत्नी का मजाक उड़ाता हो ? चुटकुले हंसा सकते हैं पर, उनमें दाग भी रह सकते हैं।<sup>19</sup>

अंत में पौलुस ने “सब प्रकार की कड़वाहट” जोड़ा है। यहां “सब” शब्द को रेखांकित करें: हमें अपने आप को हर प्रकार की कड़वाहट से, चाहे वह किसी भी प्रकार की हो दूर रखना है। NEB में “हर प्रकार की दुर्भावना” है। इसे दूसरों को दुर्भाव से दुखी भी करना हो सकता है। ये सब बातें इसी से जुड़ी होती हैं, चाहे हम अपने साथी से नाराज होने पर अपने क्रोध को सब के सामने प्रकट करें या न।

पिछली बार जब आप राशन की दुकान पर गए थे,<sup>20</sup> तो क्या अपने गंदे कपड़ों से भरा हुआ थैला भी साथ लेकर गए थे ? यदि कोई दुकान में गंदे कपड़ों से भरे थैले में जीन की गंदी पैंटें, शर्टें और खराब जुराबें रख दे तो क्या आपको अजीब लगेगा ? कई पति और पत्नियां अपने गंदे और कबाड़ा कपड़ों की गठड़ी को जहां भी जाएं साथ ले आते हैं और सुनने वाले मिलते ही “उसे वहीं खोल देते हैं।”

*जहां तक हो सके अपनी बातों को अपने तक ही रखें। आपकी जो भी समस्याएं हों उन्हें अपने साथी के साथ अकेले में बांटने की कोशिश करें।<sup>1</sup>*

### **भुला दें (4:32)**

सातवां और अंतिम सुझाव है कि “भुला दें।” जब मतभेद खत्म हो जाए तो एक अच्छे मसीही की तरह सब मैल को निकाल दें।

यदि पति-पत्नी आयत 32 के निर्देश पर चलें तो उनमें कभी भी कोई भी मतभेद अधिक समय तक नहीं रह सकता: “एक दूसरे पर कृपालु और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए हैं वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो।” यह वह आयत है जो हमारे बच्चे बाइबल क्लास में सबसे पहले सीखते हैं। कितनी शर्म की बात है कि उम्र बढ़ने के साथ-साथ हम इसे या तो भूल जाते हैं या इसके नियमों पर ध्यान कम कर देते हैं !

पौलुस के शब्द हमें “एक दूसरे के प्रति दयालु” होने की चुनौती देते हैं। हर दिल पर यह लिखा होना चाहिए “नाजुक। ध्यान से उठाएं।” हमें “दयालु” होना आवश्यक है। यह आयत हमें क्षमा करने की भी चुनौती देती है: “एक दूसरे को क्षमा करो।” हमारा व्यवहार ऐसा होने के आधार पर ध्यान दें: “जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए।” यह हमें वापस पहले तीन अध्यायों की ओर ले जाता है, जहां पौलुस ने उस सब पर जोर दिया जो परमेश्वर ने हमारे लिए किया है; इसलिए हमें भी दूसरों को क्षमा करना चाहिए।

सबसे लम्बा लिखित दृष्टांत “निर्दयी सेवक” (मत्ती 18:21-35) का है, जो इन शब्दों से समाप्त होता है कि “इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा न करेगा, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुम से भी वैसा ही करेगा” (आयत 35)। क्षमा करें या फिर ज़ब्त कर लें यानी क्षमा को ही ज़ब्त करना है। मन की कड़वाहट विवाहित जीवन के लिए घातक हो सकती है। पुराने घावों को भर दें और फिर कभी उन्हें खोलने की कोशिश



न करें।

कई साल से मैं जवानों के लिए समर कैम्प का संचालन करता आ रहा हूँ। पहले दिन मेरा भाषण कुछ ऐसा होता है: “कैबिनो में कोई गड़बड़ नहीं होनी चाहिए: एक दूसरे को तौलिये नहीं मारना, तकिये से लड़ना नहीं है, करतब नहीं दिखाने हैं, जिससे किसी को चोट लग जाए। इसका कारण यह है कि आप तो किसी को तौलिये से मारते हैं पर वह छड़ी लेकर आपकी पिटाई करता है। आप पत्थर उठा कर उसे मारते हैं और वह चाकू निकाल लेता है। आप पिस्तौल निकाल कर उस पर गोली चलाते हैं। वह ऑटोमैटिक हथियार निकालकर आप पर गोलियों की बौछार कर देता है। आप उस क्षेत्र पर मशीनगन से गोलियां चलाते हैं। वह आप पर वहीं जहां आप खड़े हैं, रॉकेट चला देता है। आप जहाज़ में बैठ कर बम गिराते हैं। वह उससे भी बड़ा बम गिराता है। आप ऐटम बम गिराते हैं। वह हाइड्रोजन बम गिरा देता है। इस संस्कृति का जिसे हम जानते हैं, अन्त हो जाता है और इसका कारण केवल यह था कि आपने तौलिये से किसी को मारा था।

इस छोटे से भाषण के साथ मैंने थोड़ा-थोड़ा हंसा भी दिया, पर मुझे उम्मीद है कि मैं अपनी बात समझाने में भी सफल रहा हूँ। अफसोस की बात है कि जिन घटनाओं की शृंखला मैंने दी है वह उससे कहीं अधिक सत्य है, जिस पर हम विचार करना चाहेंगे। औसत आदमी के साथ जब दुर्व्यवहार होता है तो वह भी “इसका बदला चुकाने” की सोचता है,<sup>22</sup> पर जिसके साथ अंत में दुर्व्यवहार हुआ, वह यह कभी नहीं सोचता कि न्याय तराजू में तौला गया है, जिस कारण उसे लगता है कि उसे एक और घाव देना चाहिए। यदि आपके वैवाहिक जीवन में घृणा इतनी बढ़ गई है, तो किसी को तो इस पागलपन को रोकना ही होगा। वह रोकने वाले आप बन जाएं।

*भुला दें। क्षमा करें, और जो ज्यादा जरूरी बातें हैं, उन्हीं पर ध्यान दें।*

## सारांश

आइए उन सातों सुझावों पर फिर विचार करें। जब आप और आपका साथी असहमत हों तो चाहिए कि आप ...

- (1) ईमानदार रहें
- (2) अपने आप को काबू में रखें
- (3) इसे ठीक कर लें
- (4) आशावादी रहें
- (5) चौकस रहें
- (6) इसे निजी रखें
- (7) भुला दें

यह सलाह कलीसियों के लिए, व्यवसायी के लिए, समाज के लिए, राष्ट्रों के लिए यानी सब के लिए है। सबसे बढ़कर यह सलाह आपके घर के लिए और आपके वैवाहिक जीवन के लिए आवश्यक है। परमेश्वर करे कि आपका वैवाहिक जीवन ऐसा हो जिससे

आप के जीवन में आशीष हो, आपके साथी के जीवन को आशीष, आपके बच्चे के जीवन को आशीषित करे १<sup>3</sup>

### टिप्पणियां

<sup>1</sup>यदि आप मसीही घर पर पाठों की श्रृंखला दे रहे हैं तो आपको चाहिए कि पिछले पाठ और इस पाठ के बीच की कुछ सामग्री शामिल करें। <sup>2</sup>22 से 24 आयतों में “उतार डालो” और “पहन लो” वाक्यांशों पर ध्यान दें। <sup>3</sup>मैं सुनने वाले को आम तौर पर यह परामर्श देता हूँ, “आप कुछ नोट्स बना लें, आप इन सात सुझावों को अपनी बाइबल में भी लिख सकते हैं।” <sup>4</sup>अमेरिकी श्रोताओं के लिए मैं यह शब्द जोड़ता हूँ, “एक-दूसरे से खेल न खेलें,” परन्तु अलंकारिक भाषा “खेलें खेलना” का अर्थ हो सकता है कि हर जगह समझ न आए। <sup>5</sup>“हम एक दूसरे के अंग हैं” वाक्य मानवीय शरीर के अंगों (हाथ, भुजाएं आदि) पर आधारित एक रूपक है। <sup>6</sup>KJV में (NKJV के साथ) मत्ती 18:15 में वचन में “तेरे विरुद्ध” जोड़ा गया है। <sup>7</sup>KJV में “न शैतान को जगह दो” है। “शैतान को एक जगह न दो” गलत अनुवाद नहीं होगा: उसे अपने दिल और जीवन में जगह न दो। <sup>8</sup>दि जरूसलेम बाइबल (लंदन: डार्टन, लॉन्गमैन एण्ड टॉड, 1967)। <sup>9</sup>जब हम व्यक्ति की शारीरिक “प्रतिरोध कम” होने की बात करते हैं, तो हमारे कहने का अर्थ संक्रमण और बीमारी का मुकाबला करने की उसकी कमजोरी होता है। जब व्यक्ति की प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है तो उसे ऐसी स्थितियों से परहेज करना चाहिए जहां संक्रमित जीवाणु अधिक मात्रा में पाए जाते हों। <sup>10</sup>जब कलीसिया के सदस्य सहमत न हों तो यह कोशिश की जा सकती है: उन्हें इकट्ठे एक कमरे में डाल दें और जब तक वे एक मत नहीं होते उन्हें वहीं रहने दें।

<sup>11</sup>इसे कहने के लिए आजकल अमेरिका में इस्तेमाल किए जाने वाला वाक्यांश “एक-दूसरे को पक्का करना” है। <sup>12</sup>कई बार यह जोर देने के लिए कि यह कितना सच होता है, मैं यह कहते हुए कि “नौ” में से दस” बढ़ाकर बताता हूँ। <sup>13</sup>इसलिए KJV में “गन्दी” शब्द इस्तेमाल हुआ है। “गन्दा” खाना खराब हो चुका खाना होता है। <sup>14</sup>द न्यू टैस्टामेंट इन मॉडर्न इंग्लिश, अनुवादक जे. बी. फिलिप्स (न्यू यार्क: मैक्सिमल कं., 1958)। <sup>15</sup>द अमेरिकन हैरिटेज डिक्शनरी, तीसरा संस्करण, एस.वी., “टैक्ट।” <sup>16</sup>माता-पिता के रूप में अपने बच्चों के दुर्व्यवहार करने पर अपने दुःखी होने की ओर ध्यान दिलाते हुए आप इसे उदाहरण के रूप में दे सकते हैं। आखिर सब अर्थात् हम, तुम या मैं परमेश्वर की संतान तो हैं। <sup>17</sup>जनरल रॉबर्ट ई.ली. ने अमेरिका के गृह युद्ध के दौरान संघीय (दक्षिणी) बलों को आदेश दिया। <sup>18</sup>आयत 26 में “क्रोध” (*orge*) के लिए इस्तेमाल होने वाला एकमात्र शब्द है, पर आयत 31 में “क्रोध” के लिए दो अलग-अलग शब्द (*thumos* और *orge*) इस्तेमाल किए गए हैं। वाइन ने लिखा, “*Thumos* का *orge* से इस अर्थ में अलग किया जाता है कि *thumos* भावनाओं अर्थात् मन के रोष से क्रोध के फूटने की अधिक उत्तेजित स्थिति है, जबकि *orge* मन की अधिक स्थापित या ठहरने वाली स्थिति का सुझाव देता है, जो आमतौर पर बदला लेने के विचार से होता है” (डब्ल्यू. ई. वाइन, *द एक्वैडेड वाइन 'स एक्वोजिस्ट्री डिक्शनरी ऑफ़ न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स*, संपा. जॉन आर. कोहेलिंगर तृतीय के साथ जेम्स ए. स्वेसन [मिनियापोलिस, मिनेसोटा: बैथनी हाउस पब्लिशर्स, 1984], 47)। <sup>19</sup>हल्का फुल्का हंसाना ताना देकर अपमान करने से बहुत अलग है। कई बार जब हमें लगता है कि हम किसी को हंसा रहे हैं, तो हमारी बातों को किसी का मजाक उड़ाना मान लिया जाता है। आपके साथी द्वारा आप पर चुटकुला बनाकर दूसरों को बताने में स्पष्ट और ईमानदार (पहला सुझाव) रहकर कि आपकी उस पर क्या भावना है संवाद का होना बड़ा आवश्यक है। <sup>20</sup>यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में किया जाता है तो आप कह सकते हैं, “पिछली बार जब आप आराधना के लिए आए थे, ...”

<sup>21</sup>इस सुझाव का अर्थ यह नहीं है कि कई बार पतियों और पत्नियों को सलाह की आवश्यकता नहीं

होती जिसमें उनके संघर्षों के बारे में सलाहकार को खोलकर बताना शामिल है। यह अपनी समस्या सार्वजनिक करने से बिल्कुल अलग है।<sup>22</sup> यह सत्य हो सकता है जब वह उसे यही ध्यान हो कि उसके साथ दुर्व्यवहार हुआ है।<sup>23</sup> यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में होता है तो स्थिति के अनुरूप जैसा भी निमन्त्रण सही लगे, आप दे सकते हैं। कई बार इस पाठ के अन्त में मेरे निमन्त्रण में दिया जाने वाला जोर क्षमा पाने की आवश्यकता पर होता है। कई मसीहियों को अपने साथ दुर्व्यवहार होने पर (या उन्हें ऐसा लगने पर कि उनके साथ दुर्व्यवहार हुआ है) क्षमा करना कठिन लगता है। दूसरों को क्षमा करने की समस्या से जूझने वालों के साथ और उनके लिए प्रार्थना करें।